॥ करवाचौथ व्रत एवं पूजन विधि ॥

करवा चौथ का महत्व .....

करवा चौथ व्रत का हिन्दू संस्कृति में विशेष महत्त्व है। करवा चौथ का त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी में मनाया जाता है।

करवा चौथ में दो शब्द हैं। पहला शब्द करवा है, जिसका अर्थ होता है कि मिट्टी से बना बर्तन। जबकि चौथ से आशय चतुर्थी तिथि से है।

मान्यता है कि करवा का प्रयोग जीवन में सुख-समृद्धि को दर्शाता है। इस दिन विवाहित स्त्रियाँ अपने पति के लिये विधि विधान के साथ लम्बी उम्र एवं सुखी जीवन की कामना हेतु निर्जला व्रत रखती है। करवा चौथ पति-पत्नी के बीच एक प्रेम और विश्वास से परिपूर्ण अटूट बंधन को दर्शाता है।

करवा चौथ व्रत के नियम .....

1. सुबह सूर्योदय से पहले स्नान आदि करके पूजा घर की सफ़ाई करें। और भगवान की पूजा करके निर्जला व्रत का संकल्प लें।
2. यह व्रत उनको संध्या में सूरज अस्त होने के बाद चन्द्रमा के दर्शन करके ही खोलना चाहिए और बीच में जल भी नहीं पीना चाहिए।
3. संध्या के समय चंद्रोदय से 1 घंटा पहले एक वेदी पर शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा (मूर्ति के अभाव में सुपारी) की स्थापना करें एवं माँ पार्वती का सुहाग सामग्री आदि से श्रृंगार करें। तथा कथा सुनें। इसमें 10 से 13 करवे (करवा चौथ के लिए ख़ास मिट्टी के कलश) रखें।
4. पूजन-सामग्री में धूप, दीप, चन्दन, रोली, सिन्दूर आदि थाली में रखें। दीपक में पर्याप्त मात्रा में घी रहना चाहिए, जिससे वह पूरे समय तक जलता रहे।
5. पूजन के समय देव-प्रतिमा का मुख पश्चिम की तरफ़ होना चाहिए तथा स्त्री को पूर्व की तरफ़ मुख करके बैठना चाहिए।
6. चन्द्रमा निकलने से लगभग एक घंटे पहले पूजा शुरू की जानी चाहिए। अच्छा हो कि परिवार की सभी महिलाएँ साथ पूजा करें।
7. चन्द्र दर्शन छलनी के द्वारा किया जाना चाहिए और साथ ही दर्शन के समय अर्घ्य के साथ चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिए। अर्घ्य देकर अपने पति के हाथ से जल एवं मिष्ठान खा कर व्रत खोले।
8. चन्द्र-दर्शन के बाद बहू अपनी सास को थाली में सजाकर मिष्ठान, फल, मेवे, रूपये आदि देकर उनका आशीर्वाद ले और सास उसे अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दे।

करवा चौथ पर्व की पूजन सामग्री .....

कुंकुम, शहद, अगरबत्ती, पुष्प, कच्चा दूध, शक्कर, शुद्ध घी, दही, मेंहदी, मिठाई, गंगाजल, चंदन, चावल, सिन्दूर, मेंहदी, महावर, कंघा, बिंदी, चुनरी, चूड़ी, बिछुआ, मिट्टी का टोंटीदार करवा व ढक्कन, दीपक, रुई, कपूर, गेहूँ, शक्कर का बूरा, हल्दी, पानी का लोटा, गौरी बनाने के लिए पीली मिट्टी, लकड़ी का आसन, छलनी, आठ पूरियों की अठावरी, हलुआ, दक्षिणा के लिए पैसे।

करवा चौथ महात्म्य .....

छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार चंद्रमा में पुरुष रूपी ब्रह्मा की उपासना करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इससे जीवन में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता है। साथ ही साथ इससे लंबी और पूर्ण आयु की प्राप्ति होती है। करवा चौथ के व्रत में शिव, पार्वती, कार्तिकेय, गणोश तथा चंद्रमा का पूजन करना चाहिए। चंद्रोदय के बाद चंद्रमा को अघ्र्य देकर पूजा होती है। पूजा के बाद मिट्टी के करवे में चावल,उड़द की दाल, सुहाग की सामग्री रखकर सास अथवा सास के समकक्ष किसी सुहागिन के पांव छूकर सुहाग सामग्री भेंट करनी चाहिए।

महाभारत से संबंधित कथा के अनुसार पांडव पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी पर्वत पर चले जाते हैं। दूसरी ओर बाकी पांडवों पर कई प्रकार के संकट आन पड़ते हैं। द्रौपदी भगवान श्रीकृष्ण से उपाय पूछती हैं। वह कहते हैं कि यदि वह कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन करवाचौथ का व्रत करें तो इन सभी संकटों से मुक्ति मिल सकती है। द्रौपदी विधि विधान सहित करवाचौथ का व्रत रखती है जिससे उनके समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं।

सरगी का महत्त्व .....

पंजाब में करवा चौथ में सरगी का काफी महत्व है। सरगी सास की तरफ से अपनी बहू को दी जाती है। इसका सेवन महिलाएं करवाचौथ के दिन सूर्य निकलने से पहले तारों की छांव में करती हैं। सरगी के रूप में सास अपनी बहू को विभिन्न खाद्य पदार्थ एवं वस्त्र इत्यादि देती हैं। सरगी, सौभाग्य और समृद्धि का रूप होती है। सरगी के रूप में खाने की वस्तुओं को जैसे फल, मीठाई आदि को व्रती महिलाएं व्रत वाले दिन सूर्योदय से पूर्व प्रात: काल में तारों की छांव में ग्रहण करती हैं। तत्पश्चात व्रत आरंभ होता है। अपने व्रत को पूर्ण करती हैं।

भारत के अन्य प्रदेश , उत्तर प्रदेश , राजस्थान मध्य प्रदेश आदि में गौर माता की पूजा की जाती है। गौर माता की पूजा के लिए प्रतिमा गाय के गोबर से बनाई जाती है।

मेहंदी .....

मेहंदी को भाग्य का प्रतीक माना जाता है। भारत में ऐसी मान्यता है कि यदि किसी लड़की के हाथों में मेहंदी का रंग गहराई से चढ़ता है तो उसका पति अथवा प्रेमी उसे उतना ही प्रेम करता है। एक

अन्य मान्यता के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि हाथों में मेंहदी का गाढ़ा रंग पति की दीर्घायु और उसके स्वस्थ्य जीवन को दर्शाता है।

चंद्रमा को अर्घ्य देने की परंपरा

करवा चौथ की रात में जब चंद्रमा उदय होता है तो उसी व्रत रखने वाली शादीशुदा महिलाएँ पूजा की सजी हुई थाली के साथ छत पर आ जाती हैं। इस दौरान वे चंद्रमा की पूजा करती हैं। वे चंद्र देव को अर्घ्य देती हैं। करवा चौथ पर चंद्रमा की पूजा का बड़ा महत्व है। इस दिन चंद्रमा के दर्शन और पूजन के बाद महिलाएं व्रत तोड़कर अन्न-जल ग्रहण करती हैं।

इस पूजन के दौरान पहले महिलाएँ छलनी से चंद्रमा के दर्शन करती हैं और फिर अपने पति को देखती हैं। इसके बाद पति के हाथों जल या मिठाई लेकर व्रत खोलती हैं। इस दिन चंद्रमा के साथ-साथ भगवान शिव एवं माँ पार्वती और भगवान कार्तिकेय की पूजा होती है। ऐसा कहा जाता है कि इनकी पूजा करने से दांपत्य जीवन ख़ुशहाल बना रहता है और जीवनभर सुख-समृद्धि का आगमन होता है।

॥ पूजा प्रारम्भ ॥

- **पवित्रकरणम् .....**
    - **ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ।**
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स: वाह्याभंतर: शुचि: ॥
- **आचम्य .....** (मुंह को स्पर्श करें पीयें न)
    - **ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः**
- **आसन शुद्धि .....**
    - **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।**
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- **तिलक / चन्दन .....**
    - **चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् । आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥**
    - **ॐ आदित्या वसो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणा: । तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥**
- **रक्षाबन्धनम् .....**
    - **येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल: । तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल: ॥**
    - **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥**

- **भद्रसूक्त / स्वस्ति-वाचन .....**

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभिनो निवर्तताम् । देवाना गुं सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् । अर्यमणं वरुणं गुं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पुषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम ॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१२॥

सुमुखश्चै एकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम । प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम । येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥
वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ । निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

ॐ श्रीमन महागणाधीपतये नमः, इष्ट देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः, लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः, उमा महेश्वराभ्याम नमः, शची पुरंदाराभ्याम नमः, मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः

- **संकल्प .....**

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे, (ग्रामे वा) बौद्धावतारे अमुक शालीवाहन शके, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, दक्षिणायने, मासानां मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे, कृष्ण पक्षे, करक चतुर्थी तिथौ, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (गोत्र का नाम लें) अमुकनामाः (अपना नाम लें) मम श्रुति-स्मृति-पूराणोक्तफल प्राप्तयर्थं सुख-सौभाग्य दीर्घ-आयु-आरोग्य पुत्र-पौत्र-धन-धान्यादि समृद्ध्यर्थे शिवपरिवार पूजनसहितं करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।

- **रक्षा विधानम् .....**
  - अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
    अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे ।।
- **सूर्यनमस्कार .....**
  - आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
    हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।
- **शंख पूजनम् .....**
  - ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नो शंखः प्रचोदयात् ।।
- **घंटी पूजनम् .....**
  - आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ।।
- **कलश ध्यान .....**
  - ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
    अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश गुं समान आयुः प्रमोषीः।
- **गणेश आवाहन .....**
  - गणानां त्वा गणपतिं गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं गुं हवामहे ।
    निधीनां त्वा निधिपतिं गुं हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।

- **शिव आवाहन .....**
    - ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
      रत्नाकल्पोज्वलांगं परषुमृगावरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
      पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणै र्व्याघ्रकृतिं वसानं।
      विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
    - ॐ नमः सम्भवायच मयो भवायच नमः शङ्कराच मयस्करायच नमः शीवायच शिवतराय च॥
- **माता गौरी ध्यान .....**
    - सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ।।
- **कार्तिके आवाहन .....**
    - देव सेनापते स्कंद कार्तिकेय भवोद्भव। कुमार गुह गांगेय शक्तिहस्त नमोस्तु ते॥
- **चंद्रमा आवाहन .....**
    - ॐ इमं देवा असपत्नं गुं सुवद्ध्वं। महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्दस्ये न्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एस वोऽमी राज सोमोऽस्माकं ब्राह्माणाना गुं राजा ।।
- प्राणप्रतिष्ठा .....
    - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।
- **आह्वान .....**
    - ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्ल। सभूमि गुं सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥
- **आसन .....**
    - पुरुषऽएवेदं गुं सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।
- **पाद्य .....**
    - एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोSस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।।
- **अर्घ्य .....**
    - त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्ष्वङ् व्यक्रा मत्सा शनानशनेऽअभि।।

- **आचमन .....**
  - ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥
- **स्नान .....**
  - तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥
- **पंचामृत स्नान .....**
  - ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यान्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित।
- **गन्धोदक स्नान .....**
  - ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
- **शुद्धोदक स्नान .....**
  - ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनः। श्वेतः श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।
- **वस्त्र .....**
  - सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यतां ॥
- **उपवस्त्र ....**
  - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः । वासोग्ने विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो ॥
- **यज्ञोपवित .....**
  - ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
    आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
- **गंध / चंदन .....**
  - ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
  - ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वां मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
    त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् मुच्यत् ॥
- **अक्षत .....**
  - अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता : सुशोभिता : । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
  - ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधुषत।
    अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न्नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी॥

- **सुगन्ध द्रव्य .....**
    - ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम । उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ।।
    - ॐ अ गुं शुनाते अ गुं शु: पृच्यतां परुषा परु: । गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्च्युत: ।।
- **पुष्प / पुष्पमाला .....**
    - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाहृतानि पुष्पाणि पूज्यार्थं प्रतिगृह्यतां ।।
- **दुर्वा .....**
    - ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुष:परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ।।
- **बिल्वपत्र .....**
    - ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च
      नम: श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरय चाहनन्यायच ।
- **सौभाग्य द्रव्य .....**
    - ॐ अहिरीव भोगै: पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिवाधमान:।
      हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान पुमान पुमा गंगवहे समपरिपातुविश्वत:।।
- **धुप .....**
    - धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वाम: ।
      देवानामसि वह्नितमं गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ।।
- **दीप .....**
    - ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तम वाहिन्ना योजितम मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम ।।
- **नैवद्य .....**
    - ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गूं शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।
      पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।
- **अखण्ड ऋतुफल .....**
    - ॐ याफलिनीर्याऽफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गूं ह स:।।
    - इदं फलं मया देवि स्थापितम पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर भवेत जन्मनि जन्मनि ।।
- **ताम्बूल / पूगीफल .....**
    - ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् । एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।
    - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि:।।

- **दक्षिणा .....**
    - **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
    स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ।।**
- **नीराजंन .....**
    - **ॐ आ रात्रि पार्थिव गूं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
    दिवः सदा गूं सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः।।**
    - **ॐ इद गुं हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर गुं सर्वगण गुं स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसति लोकसन्य भयसनिः। अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत।**

- **करवा चौथ प्रथम कथा .....**

बहुत समय पहले की बात है, एक साहूकार के सात बेटे और उनकी एक बहन करवा थी। सभी सातों भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। यहाँ तक कि वे पहले उसे खाना खिलाते और बाद में स्वयं खाते थे। एक बार उनकी बहन ससुराल से मायके आई हुई थी।

शाम को भाई जब अपना व्यापार-व्यवसाय बंद कर घर आए तो देखा उनकी बहन बहुत व्याकुल थी। सभी भाई खाना खाने बैठे और अपनी बहन से भी खाने का आग्रह करने लगे, लेकिन बहन ने बताया कि उसका आज करवा चौथ का निर्जल व्रत है और वह खाना सिर्फ चंद्रमा को देखकर उसे अर्घ्य देकर ही खा सकती है। चूँकि चंद्रमा अभी तक नहीं निकला है, इसलिए वह भूख-प्यास से व्याकुल हो उठी है।

सबसे छोटे भाई को अपनी बहन की हालत देखी नहीं जाती और वह दूर पीपल के पेड़ पर एक दीपक जलाकर चलनी की ओट में रख देता है। दूर से देखने पर वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चतुर्थी का चाँद उदित हो रहा हो।

उसके बाद भाई अपनी बहन को बताता है कि चाँद निकल आया है, तुम उसे अर्घ्य देने के बाद भोजन कर सकती हो। बहन खुशी के मारे सीढ़ियों पर चढ़कर चाँद को देखती है, उसे अर्घ्य देकर खाना खाने बैठ जाती है। वह पहला टुकड़ा मुँह में डालती है तो उसे छींक आ जाती है। दूसरा टुकड़ा डालती है तो उसमें बाल निकल आता है और जैसे ही तीसरा टुकड़ा मुँह में डालने की कोशिश करती है तो उसके पति की मृत्यु का समाचार उसे मिलता है। वह बौखला जाती है।

उसकी भाभी उसे सच्चाई से अवगत कराती है कि उसके साथ ऐसा क्यों हुआ। करवा चौथ का व्रत गलत तरीके से टूटने के कारण देवता उससे नाराज हो गए हैं और उन्होंने ऐसा किया है।

सच्चाई जानने के बाद करवा निश्चय करती है कि वह अपने पति का अंतिम संस्कार नहीं होने देगी और अपने सतीत्व से उन्हें पुनर्जीवन दिलाकर रहेगी। वह पूरे एक साल तक अपने पति के शव के पास बैठी रहती है। उसकी देखभाल करती है। उसके ऊपर उगने वाली सूईनुमा घास को वह एकत्रित करती जाती है।

एक साल बाद फिर करवा चौथ का दिन आता है। उसकी सभी भाभियाँ करवा चौथ का व्रत रखती हैं। जब भाभियाँ उससे आशीर्वाद लेने आती हैं तो वह प्रत्येक भाभी से 'यम सूई ले लो, पिय सूई दे दो, मुझे भी अपनी जैसी सुहागिन बना दो' ऐसा आग्रह करती है, लेकिन हर बार भाभी उसे अगली भाभी से आग्रह करने का कह कर चली जाती है।

इस प्रकार जब छठे नंबर की भाभी आती है तो करवा उससे भी यही बात दोहराती है। यह भाभी उसे बताती है कि चूँकि सबसे छोटे भाई की वजह से उसका व्रत टूटा था अतः उसकी पत्नी में ही शक्ति है कि वह तुम्हारे पति को दोबारा जीवित कर सकती है, इसलिए जब वह आए तो तुम उसे पकड़ लेना और जब तक वह तुम्हारे पति को जिंदा न कर दे, उसे नहीं छोड़ना। ऐसा कह के वह चली जाती है।

सबसे अंत में छोटी भाभी आती है। करवा उनसे भी सुहागिन बनने का आग्रह करती है, लेकिन वह टालमटोली करने लगती है। इसे देख करवा उन्हें जोर से पकड़ लेती है और अपने सुहाग को जिंदा करने के लिए कहती है। भाभी उससे छुड़ाने के लिए नोचती है, खसोटती है, लेकिन करवा नहीं छोड़ती है।

अंत में उसकी तपस्या को देख भाभी पसीज जाती है और अपनी छोटी अँगुली को चीरकर उसमें से अमृत उसके पति के मुँह में डाल देती है। करवा का पति तुरंत श्रीगणेश-श्रीगणेश कहता हुआ उठ बैठता है। इस प्रकार प्रभु कृपा से उसकी छोटी भाभी के माध्यम से करवा को अपना सुहाग वापस मिल जाता है। हे श्री गणेश माँ गौरी जिस प्रकार करवा को चिर सुहागन का वरदान आपसे मिला है, वैसा ही सब सुहागिनों को मिले।

- **करवाचौथ द्वितीय कथा**

इस कथा का सार यह है कि शाकप्रस्थपुर वेदधर्मा ब्राह्मण की विवाहिता पुत्री वीरवती ने करवा चौथ का व्रत किया था। नियमानुसार उसे चंद्रोदय के बाद भोजन करना था, परंतु उससे भूख नहीं सही गई और वह व्याकुल हो उठी। उसके भाइयों से अपनी बहन की व्याकुलता देखी नहीं गई और उन्होंने पीपल की आड़ में आतिशबाजी का सुंदर प्रकाश फैलाकर चंद्रोदय दिखा दिया और वीरवती को भोजन करा दिया।

परिणाम यह हुआ कि उसका पति तत्काल अदृश्य हो गया। अधीर वीरवती ने बारह महीने तक प्रत्येक चतुर्थी को व्रत रखा और करवा चौथ के दिन उसकी तपस्या से उसका पति पुनः प्राप्त हो गया।

- **करवा चौथ तृतीय कथा**

एक समय की बात है कि एक करवा नाम की पतिव्रता स्त्री अपने पति के साथ नदी के किनारे के गाँव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। स्नान करते समय वहाँ एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। वह मनुष्य करवा-करवा कह के अपनी पत्नी को पुकारने लगा।

उसकी आवाज सुनकर उसकी पत्नी करवा भागी चली आई और आकर मगर को कच्चे धागे से बाँध दिया। मगर को बाँधकर यमराज के यहाँ पहुँची और यमराज से कहने लगी- हे भगवन! मगर ने मेरे पति का पैर पकड़ लिया है। उस मगर को पैर पकड़ने के अपराध में आप अपने बल से नरक में ले जाओ।

यमराज बोले- अभी मगर की आयु शेष है, अतः मैं उसे नहीं मार सकता। इस पर करवा बोली, अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आप को श्राप देकर नष्ट कर दूँगी। सुनकर यमराज डर गए और उस पतिव्रता करवा

के साथ आकर मगर को यमपुरी भेज दिया और करवा के पति को दीर्घायु दी। हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पति की रक्षा की, वैसे सबके पतियों की रक्षा करना।

- **करवाचौथ चौथी कथा**

एक बार पांडु पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी नामक पर्वत पर गए। इधर द्रोपदी बहुत परेशान थीं। उनकी कोई खबर न मिलने पर उन्होंने कृष्ण भगवान का ध्यान किया और अपनी चिंता व्यक्त की। कृष्ण भगवान ने कहा- बहना, इसी तरह का प्रश्न एक बार माता पार्वती ने शंकरजी से किया था।

पूजन कर चंद्रमा को अर्घ्य देकर फिर भोजन ग्रहण किया जाता है। सोने, चाँदी या मिट्टी के करवे का आपस में आदान-प्रदान किया जाता है, जो आपसी प्रेम-भाव को बढ़ाता है। पूजन करने के बाद महिलाएँ अपने सास-ससुर एवं बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लेती हैं।

तब शंकरजी ने माता पार्वती को करवा चौथ का व्रत बतलाया। इस व्रत को करने से स्त्रियाँ अपने सुहाग की रक्षा हर आने वाले संकट से वैसे ही कर सकती हैं जैसे एक ब्राह्मण ने की थी। प्राचीनकाल में एक ब्राह्मण था। उसके चार लड़के एवं एक गुणवती लड़की थी।

एक बार लड़की मायके में थी, तब करवा चौथ का व्रत पड़ा। उसने व्रत को विधिपूर्वक किया। पूरे दिन निर्जला रही। कुछ खाया-पीया नहीं, पर उसके चारों भाई परेशान थे कि बहन को प्यास लगी होगी, भूख लगी होगी, पर बहन चंद्रोदय के बाद ही जल ग्रहण करेगी।

भाइयों से न रहा गया, उन्होंने शाम होते ही बहन को बनावटी चंद्रोदय दिखा दिया। एक भाई पीपल की पेड़ पर छलनी लेकर चढ़ गया और दीपक जलाकर छलनी से रोशनी उत्पन्न कर दी। तभी दूसरे भाई ने चे से बहन को आवाज दी- देखो बहन, चंद्रमा निकल आया है, पूजन कर भोजन ग्रहण करो। बहन ने भोजन ग्रहण किया।

भोजन ग्रहण करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। अब वह दुःखी हो विलाप करने लगी, तभी वहाँ से रानी इंद्राणी निकल रही थीं। उनसे उसका दुःख न देखा गया। ब्राह्मण कन्या ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दुःख का कारण पूछा, तब इंद्राणी ने बताया- तूने बिना चंद्र दर्शन किए करवा चौथ का व्रत तोड़ दिया इसलिए यह कष्ट मिला।

अब तू वर्ष भर की चौथ का व्रत नियमपूर्वक करना तो तेरा पति जीवित हो जाएगा। उसने इंद्राणी के कहे अनुसार चौथ व्रत किया तो पुनः सौभाग्यवती हो गई। इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत करना चाहिए। द्रोपदी ने यह व्रत किया और अर्जुन सकुशल मनोवांछित फल प्राप्त कर वापस लौट आए। तभी से हिन्दू महिलाएँ अपने अखंड सुहाग के लिए करवा चौथ व्रत करती हैं।

- **चंद्रदेव अर्घ्य मंत्र .....**

चंद्रदेव को अर्घ्य देते समय इस मंत्र का जप करें। इस मंत्र के जप करने से घर में सुख व शांति आती है।

- **गगनार्णवमाणिक्य चन्द्र दाक्षायणीपते। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गणेशप्रतिरूपक॥**

- **करवा चौथ आरती .....**

ॐ जय करवा मैया, माता जय करवा मैया।
जो व्रत करे तुम्हारा, पार करो नइया ..... ॐ जय करवा मैया।

सब जग की हो माता, तुम हो रुद्राणी।
यश तुम्हारा गावत, जग के सब प्राणी ..... ॐ जय करवा मैया।

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, जो नारी व्रत करती।
दीर्घायु पति होवे, दुख सारे हरती ..... ॐ जय करवा मैया।

होए सुहागिन नारी, सुख संपत्ति पावे।
गणपति जी बड़े दयालु, विघ्न सभी नाशे ..... ॐ जय करवा मैया।

करवा मैया की आरती, व्रत कर जो गावे।
व्रत हो जाता पूरन, सब विधि सुख पावे ..... ॐ जय करवा मैया।

- **पुष्पांजलि .....**

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे । समे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्वात् सार्वभौमः। सार्वायुष आन्तादा परार्धात। पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्नगृहे। आविक्षितस्य कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इतिः।

ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहु रुत विश्वतस्पात। सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयंदेव एकः। नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

- **प्रदक्षिणा .....**
  - ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे॥
  - ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा गुं सहस्रयोजनेऽ वधन्वा नितन्मसि॥

- **समर्पण .....**
  - अनेन कृतेन पूजनेन शिव-पार्वती प्रीयताम्, न मम। शिवार्पणमस्तु।